PART-**1**

रोमन भूगोलवेत्ता- टालमी

भाग-2

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

टालमी (Ptolemy)

टालमी एक महान खगोलशास्त्री थे जिन्होंने खगोल शास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक **'अलमाजेस्ट'** (Almagest) की रचना की थी। प्रेक्षण, अन्वेषण तथा लेखन द्वारा टालमी ने गणितीय भूगोल, मानचित्रकला और सामान्य भूगोल के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रचीन काल के समस्त यूनानी और रोमन भूगोलवेत्ताओं में टालमी सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। टालमी के कार्यों का संकलन **'अलमाजेस्ट'** नामक पुस्तक में किया गया है जो अरबी भाषा में लिखी गयी है। टालमी की अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं- **'ज्योग्राफिया'** (Geographia) 'ग्रहीय परिकल्पना' और **'एनेलिमा'**। टालमी के कार्यक्षेत्र का विवरण निम्नांकित हैं।

खगोलिकी (Astronomy)

टालमी की **'अलमाजेस्ट'** नामक पुस्तक खगोलशास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक है जो दीर्घकाल (कई शताब्दियों) तक आकाशीय पिण्डों की

गतिविधियों से सम्बंधित जानकारी के लिए मानक संदर्भ ग्रंथ के रूप में प्रतिष्ठित रही। टालमी ने अपने स्मय तक ज्ञात सभी महत्वपूर्ण स्थानों की गणितीय स्थिति का निर्धारिण किया था जिसके लिए उन्होंने अक्षांश और देशांतर रेखाओं से सम्बंधित हिप्पार्कस द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त को आधार बनाया था।

टालमी ने खगोलिकी के विषय में विस्तृत जानकारी के लिए कई प्रकार के यंत्रों द्वारा प्रेक्षण और अन्वेषण कार्य भी किया था। उनका विश्वास था कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड के मध्य (केन्द्र) में स्थित है और स्थिर है तथा सभी आकाशीय पिण्ड उसकी परिक्रमा करते हैं । टालमी ने नक्षत्रों का वेध करके 1022 नक्षत्रों की सूची तैयार की थी। इसके पर्व हिप्पार्कस द्वारा निर्मित नक्षत्रों की सूची में 850 नक्षत्र सम्मिलित किये गये थे टालमी ने बताया था कि आकाश में एक स्थिर नक्षत्र मण्डल है। इसके बाहर गतिशील नक्षत्रों का मण्डल है जिसके बाहरी भाग में सबसे अधिक गतिशीलता पायी जाती है। टालमी की 'ग्रहीय परिकल्पना' (Planetary Hypothesis) नामक पुस्तक में आकाशीय पिण्डों के पारस्परिक सम्बन्धों, उनके मध्य की दूरियों तथा उनकी गतियों आदि से सम्बंधित परिकल्पनाओं का विवरण दिया गया है। 'एनेलिमा' (Anelema) नामक पुस्तक में नक्षत्र विज्ञान तथा प्रेक्षण की परिकल्पना आदि का सैद्धान्तिक विवरण है। टालमी ने अपने प्रेक्षण और अनुभव के आधार पर

नक्षत्रों के उदय तथा अस्त होने, सांध्य प्रकाश (गोधूलि एवं उपाकाल), ऋतु आदि का पंचांग (कैलेण्डर) भी तैयार किया था। टालमी के खगोलीय विचार यूरोपीय देशों में पन्द्रहवीं शताब्दी तक माने जाते रहे किन्तु बाद में नवीन खोजों ने टालमी के विचारों को अशुद्ध और दोषपूर्ण सिद्ध कर दिया।